॥ ओ३म् ॥

# प्रभु से विनय

हे ब्रह्म! मैं तेरी शरण में आया हूँ और जहाँ भी मैं जाता हूँ वहाँ तुझे ही दृष्टिपात करता हूँ। प्राची दिक् में, पूर्व में अग्नि का प्रावधान हो रहा है और दक्षिण में इन्द्र बन करके रहते हो और प्रतीची दिक् में वरुण बन करके रहते हो उदीची दिक् में सोम बन करके रहते हो, ज्ञान के भण्डार हो, ध्रुवा में पालन करने वाले विष्णु हो और ऊर्ध्वा में पालन करने वाला बृहस्पति कहलाता है। वह प्रभु! की उपासना करता है प्रातः काल कहता है कि प्रभु पाप करने के लिए कहाँ जाऊँ और मेरे द्वारा पाप क्यों हों? हे प्रभु! मुझे इतनी शक्ति प्रदान करो कि मैं पूर्व में अग्नि के तुल्य तेज को दृष्टिपात करता रहूँ, मैं दक्षिण में इन्द्र को दृष्टिपात करता रहूँ। और अन्न का जो भण्डार है जो मानव को वृत्त बनाता है। हे प्रभु! प्रतीची में तुम वरुण बन करके रहते हो और वह वरुण ही मेरे जीवन की सार्थकता है इसी प्रकार उदीची में सोम बन करके रहते हों। सोम किसे कहते हैं? ज्ञान को सोम कहते हैं, विज्ञान को सोम कहते है। विवेक को सोम कहते हैं, वह धारण होने वाला सोम है। योगीजन इसी सोम को पान करते हुए ज्ञान और विवेक से सने हुए अमृत को प्राप्त करते हैं तो उनकी वाणी में सोमपन आ जाता है। प्रभु! आप ध्रुवा में पालन करने वाले विष्णु बन करके रहते हो, आज हम सबकी पालना करने वाले हो और ऊर्ध्वा में प्रभु! आप बृहस्पति बन करके मेरे जीवन के रक्षक बनते हो, क्योंकि रक्षा विद्या और विवेक से होती है। ज्ञानी ही संसार में महान कहलाता हैं और उसका नेतृत्व करने वाला बृहस्पति कहलाता है।

**पूज्यपाद-गुरुदेव**

अंक : 557 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 632
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 53

# अनुक्रम


| क्रम संख्या | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. प्रभु से विनय | पूज्यपाद-गुरुदेव | 3 |
| 2. अनुक्रम | | 4 |
| 3. याग | पूज्यपाद-गुरुदेव | 5-18 |
| 4. ऋषि-मुनियों के उद्‌गार | पूज्यपाद-गुरुदेव | 19-35 |
| 5. चैत्र मास में प्रभु के उपासक दैवी यज्ञ किया करते थे | पूज्यपाद-गुरुदेव | 36 |
| 6. ऋषियों के उद्‌गार | | 37 |
| 7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि | | 38-42 |


## चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 10 मार्च, 2019 से 17 मार्च, 2019 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

**श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)**

।। ओ३म् ।।

# याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। आज के हमारे वैदिक पठन पाठन में परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन आता रहा है।

**यज्ञशाला**

हमारा वेद मन्त्र याग के ऊपर अपनी विवेचना दे रहा है और वेद मन्त्र कह रहा है यागाम् भवितम् ब्रह्मणा वर्तसुतः प्रव्हा व्रतम् दिव्याम्। वेद का वाक् कहता है कि हे मानव! तू अपने में याज्ञिक बन क्योंकि परमपिता परमात्मा का यह जो जगत है यह यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। क्योंकि यागाम् भवितम् क्योंकि प्रत्येक मानव याज्ञिक बना हुआ है और यह सृष्टि के प्रारम्भ से ही कर्म चला आ रहा है। परन्तु यागाम् देखो यज्ञसुताः यागों के ऊपर ऋषि-मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान किया और इसको ले करके तत्पर रहे हैं कि यह जो परमात्मा का यह जो यज्ञोमयी स्वरूप है यह क्या है। तो बेटा! हमारे यहाँ वेद मन्त्र कहता है

कि परमपिता परमात्मा ने यह जो ब्रह्माण्ड की रचना की है यह नाना लोक-लोकान्तरों वाला जो जगत है अथवा यह जो पञ्चीकरण वाला जगत है उस परमपिता परमात्मा ने सबको नियमबद्ध करते हुए एक यज्ञशाला का निर्माण किया और यह जो यज्ञशाला है यह ब्रह्माण्ड की नाभि कहलाती है। नाभि का अभिप्रायः यह है कि ये मध्य है। जब भी मानव देखो, अपने में याग के ऊपर चिन्तन करने लगता है और याग में परणित होता रहता है तो मानो देखो, वह नाभि है। तो इसीलिए हमारे यहाँ वेदनम् भू वर्णम् मानो देखो, उसी यज्ञशाला में, नाभि रूपी यज्ञशाला में आत्मा यजमान है और परमपिता परमात्मा स्वतः ब्रह्मा हैं और वह ब्रह्मणं ब्रह्मा वर्णस्सुता। मुनिवरो! देखो, आत्मा यजमान और देखो, यह जो पञ्च होता हैं यह कोई इनमें से अध्वर्यु है, कोई उद्गाता है, कोई होता बन करके बेटा! इसका याग कर रहा है तो यह यागमयी कर्म है। आज मैं उस याग के ऊपर बेटा! देखो, तुम्हें जब मैं विचारों की पुनरुक्ति करता रहता हूँ। आज मुझे कहीं से यह प्रेरणा आ रही है कि याग के ऊपर कुछ विचार-विनिमय दिया जाए। तो वेद का मन्त्र जब याग के लिए कहता है, मुझे प्रेरित करता रहता है, कोई न कोई तो उसी प्रेरणा के आधार पर बेटा! मैं तुम्हें आज याग के सम्बन्ध में एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ अथवा विद्यालय में।

## महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे वह विद्यालय स्मरण आ रहा है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की चर्चा मैंने तुम्हें कई कालों में की हैं और यहाँ यह कि उनकी पुनरुक्तियाँ करता रहता हूँ और वह पुनरुक्तियों के आधार पर याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! अपने विद्यालय में प्रातःकालीन वह नैतिक शिक्षा देते रहते थे। और ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा जिससे ब्रह्मचारी महान् बन करके ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है, वह ब्राह्मणत्व बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मचारियों को एकत्रित करके

प्रातःकालीन बेटा! उनके मध्य में याग होता और याग को उद्बुद्ध करने वाले याज्ञवल्क्य मुनि होते। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! प्रातःकालीन न्योदा में मन्त्रों का उद्गीत गाया और न्योदा में जब वेद मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे तो वह बोले कि हे ब्रह्मचव्रता हे ब्रह्मचारियों! वेद मन्त्र कहता है कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। याज्ञवल्क्य कहते हैं कि राष्ट्रीय प्रणाली में भी सबसे प्रथम राजा के राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। मानो क्योंकि याग की हमारे यहाँ बड़ी विस्तृत विवेचना की गई है। तो आज मैं उस विवेचना में तो विशेष नहीं पहुँचुँगा। केवल विचार-विनिमय यह मुनिवरो! प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि याज्ञिक बने परन्तु याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा क्या प्रत्येक ब्रह्मचारी अपने में याज्ञिक बने।

## याग का स्वरूप

याग का अभिप्रायः क्या है बेटा! देखो, उस विद्यालय में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारी आचार्य मिल करके याग करते हैं। साकल्य और चरू अग्नि के मुखारबिन्दु में परणित करते रहे हैं। मानो देखो, वह भी याग है और एक मानो देखो, वह याग कहलाता है जब मेरी प्यारी माता अपने गर्भस्थल में अपने शिशु को शिक्षा देना प्रारम्भ करती है वह भी अपने में याग है। पालना करने का भी नाम याग माना गया है। राष्ट्रीय प्रणाली में बेटा! देखो, जो राजा के राष्ट्र में जो राजा अपने कर्त्तव्य का पालन करता है प्रजा उसके अनुसार बरतने लगती है, वह भी एक याग हो रहा है। **याग का अभिप्रायः है कि जितना भी सुकर्म है, शुभ क्रियाकलाप है सर्वत्र का नाम याग माना गया है।** तो आओ, मेरे प्यारे! मैं याग के सम्बन्ध में इतना ही केवल उद्गीत गाऊँगा कि **प्रत्येक प्राणी को याग करना चाहिए।** याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है–याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! जब वह याग की विवेचना करने लगे और न्योदा में मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे और वह यह उद्गीत गाते हुए कहते हैं कि यागाम्

भू वर्णम् ब्रह्मा यागाम् रथम् ब्रव्हे कृतम् देवाः वह याज्ञिक बन करके तुम याग करो। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी यज्ञदत्त, वह उपस्थित हुआ और यज्ञदत्त ने कहा **हे प्रभु! हम याग कैसे करें?** उन्होंने कहा कि याग में यज्ञशाला हो अष्ट कोणों वाली, चतुष कोणों वाली, नौ कोणों वाली, ग्यारह कोणों वाली और चौबीस कोणों वाली यज्ञशाला का मानो वैदिक साहित्य में वर्णन किया जाता है। तो इसीलिए तुम याज्ञिक बनो यागाम् भू देखो, तुम याज्ञिक बन करके उसमें बेटा! हुत करो, चरू का प्रदान करो और उन्होंने कहा कि उसमें आसन पवित्र हो और साकल्य भी पवित्र होना चाहिए। मानो देखो, अहिंसक साकल्य होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया कि उसमें यजमान हो, होता हो, उद्गाता हो और अध्वर्यु बन करके मुनिवरो! देखो, याग होना चाहिए। मुनिवरो! देखो, **यज्ञ का जो ऊर्ध्वा जो शिर कहलाता है शिरोमणि वह यजमान होता है और दूसरे आसन पर मानो देखो, सबसे प्रथम तो ब्रह्मा होता है परन्तु उसके पश्चात् यजमान ही है।** परन्तु यजमान मूर्ध्वा कहलाता है, उसे मूर्ध्वा कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, अध्वर्यु कहलाता है। वैसे राजा को भी हमारे यहाँ **अध्वर्यु** कहा जाता है। अध्वर्यु नाम आत्मा का भी है और यह अध्वर्यु नाम मुनिवरो! देखो, यज्ञशाला में जो साकल्य का नेतृत्व करने वाला है, साकल्य को अपने में धारयामि बनाने वाला है उसका नाम अध्वर्यु कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, राजा इसीलिए क्योंकि वह वशिष्ठ है इसीलिए उसको हमारे यहाँ देखो, ऊर्ध्वा अमृताम् देखो, वह मूर्ध्वा के रूप में वह अध्वर्यु कहलाता है। मेरे प्यारे! दूसरा उद्गाता होता है। **उद्गाता** उसे कहते हैं जो उद्गीत गाता है, वेद मन्त्रों का गान गा रहा है, स्वर सङ्गम में गा रहा है। जो मेरे प्यारे! देखो, उदात्त और अनुदात्त में गा रहा है, वह जटा पाठ और माला पाठ में गाता रहता है, नाना प्रकार का गान गाने वाला अपने में गान गाता रहता है बेटा! उसे उद्गाता कहा जाता है। वह उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा और यजमान चार स्थान होते हैं यज्ञशाला में उनके मध्य में मानो देखो, उन्हे **ऋत्विज** भी कहते हैं और इन्हे

मानो देखो, होताजन भी कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया—उन्होंने कहा यह सब देखो, यज्ञशाला का ऊर्ध्वा देखो, अनुष्ठान मात्र से उसका निर्माण देखो जैसे अवृत्त कहलाता है।

उन्होंने कहा, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह सुविधा कहीं यदि प्राप्त न हो, देखो, यज्ञशाला भी न हो, उसका साकल्य भी न हो तो हे प्रभु! हम याग कैसे करें? यज्ञशाला तो है परन्तु याग कैसे करें? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी साकल्य, अग्नि के द्वारा तुम याग करो, और याग में कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय कह करके पञ्चाहुति प्रदान करो और उससे तुम्हारा प्राण ऊर्ध्वा में प्राप्त होता हुआ, मानो देखो, अगृत प्राप्त होता रहता है। तो मेरे प्यारे! ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया क्या तुम्हारे यहाँ मानो देखो, अग्नि है और समिधा हो, और चरू होना चाहिए। देखो, अग्नि में स्वाहा कहते रहो।

## जल के द्वारा याग

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु यह भी हमने स्वीकार कर लिया परन्तु हम यह जानना चाहते हैं, भगवन्! कहीं अग्नि भी प्राप्त न हो और साकल्य भी न हो, समिधा भी न हो तो हे प्रभु! हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि ये वस्तु तुम्हें प्राप्त न हों कहीं तो मानो देखो, वह ब्रह्मणे व्रतम् मानो तुम जल के द्वारा जल का प्रोक्षण करो, जल की अञ्जलि बना करके और तुम कहो कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः कह करके तुम हुत करो। मानो देखो, हुताम भू वर्णनं ब्रह्मा तुम हुत करने वाले बनो और हुत करके देखो, अमृतम् अपने प्राणों को ऊँचा बनाओ। क्योंकि यह प्राण ही भोगतव्य है और प्राण ही भोगता है। मानो देखो, यह संसार की आभा को निगल जाता है और यह प्राण मानो देखो वृत्ति कहलाता है। इस प्राण के द्वारा मानो देखो, अञ्जलि में जल ले करके तुम कहो प्राणाय

स्वाहाः। मेरे प्यारे! यह जो देखो, जल है यही तो मानव का जीवन है, यही तो मुनिवरो! देखो, आपोमयी बना रहता है। माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो बेटा! देखो, बालक का ओढन भी जल ही है और देखो, आसन भी जल ही बना हुआ है और पाशे भी जल बने हुए हैं। मेरी प्यारी माता नहीं जानती क्या तुम्हारे गर्भस्थल में जो बाल्य विद्यमान है उसका आसन क्या है अथवा उसका ओढन क्या है। मेरे प्यारे! देखो, जल ही ओढन है और जल ही आसन, और देखो, वृत्ति कहलाता है। और जल ही मेरे प्यारे! पाशे बने हुए हैं जिसमें वह गमन करता रहता है, नाना प्रकार के मानो गतियों का प्राप्त वहीं से अमृत को प्राप्त करता रहता है। माता की नाभि और बाल्य की नाभि का दोनों का समन्वय हो करके नाभि के द्वारा बेटा! मेरे प्यारे! वेद की आभा में दृष्टिपात करते हुए कहा क्या मानो समाधि लगा करके भी ऋषि मुनि दृष्टिपात करते रहे हैं। मेरे प्यारे! माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है और वह नाड़ी का समन्वय मेरे प्यारे! पुरातत नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत नाम की नाड़ी का जो समन्वय है वह माता की लोरियों से होता हुआ पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है और वह अमृत को प्रदान किया जा रहा है, और बाल्य मानो देखो नाभि से अमृत को प्राप्त कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, कैसा मेरे प्यारे प्रभु का विज्ञान है। मेरी भोली माता नहीं जानती कि कौन अमृत दे रहा है, कौन अमृत में बना हुआ है मेरी भोली माता ज्ञान विज्ञान से वंचित रहती है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार अवृत्तम आचार्य कहता है याज्ञवल्क्य क्या मानो देखो, यह जो जल है इसी के द्वारा तुम याग करो और स्वाहाः कह करके प्राण की आहुति दो, और प्राणाय स्वाहाः कह करके मेरे प्यारे! अञ्जली से जल का प्रोक्षण करो।

## पृथ्वी की रज के द्वारा याग

उन्होंने कहा हे प्रभु! चलो यह भी हमने स्वीकार कर लिया कि जल के द्वारा हम याग करें परन्तु कहीं ऐसा हो क्या हमें जल भी कहीं प्राप्त

न हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि कहीं जल प्राप्त न हो, तो यह पृथ्वी के द्वारा, पृथ्वी की रज को ले करके याग करो और कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः उदानाय स्वाहाः व्यानम् ब्रह्मे। मेरे प्यारे! देखो, यह पञ्च आहुति तुम प्रदान करो उससे वर्चोसी बन जाओगे। वह जो गुरुत्व है, पृथ्वी का जो रज है यही तो मेरे प्यारे! देखो, पिण्ड बना हुआ है। जब सूर्य में जाते हैं तो सूर्य में भी यह पिण्ड रूप है परन्तु अग्नि प्रधान है और वही अग्नम् ब्रह्मा बेटा! उसका पिण्ड जब बनता है तो उसमें भी आपो है, उसमें भी रज है। मानो देखो, पृथ्वी का गुरुत्व परमाणु रहता है तो बेटा! यह पिण्ड बन जाता है। नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर उस पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आते रहते हैं। यह संसार एक पिण्ड बना हुआ है। माता के गर्भस्थल में मानो देखो जब ये आपो गुरुत्व का देखो एक-एक वितार्त्य हो जाता है, तो बेटा! यह जल ही यह पृथ्वी से ही पिण्ड बना करता है। यह संसार एक पिण्ड रूप में प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है। तो बेटा! यह पिण्डोमयी जगत है और यह पिण्डम् ब्रह्मा व्रतम् बेटा! ब्रह्माण्डे पिण्ड वाण कृति देवत्वाम् यह सर्वत्र मानो एक-दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है। तो बेटा! यह पिण्ड है–तो जब तक गुरुत्व का जब तक मिलान नहीं होता तब तक यह पिण्ड नहीं बन पाता, तो यह संसार एक पिण्ड के रूप में है। **माता के गर्भस्थल में पञ्च महाभूत एक-दूसरे में मिलान हो करके पिण्ड बनते हैं और पिण्ड में मानो देखो, जीवन आत्मा विद्यमान रहता है,** जिसको, वह पिण्ड को वह क्रिया देने वाला हो। तो आओ, मेरे प्यारे मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह उन्होंने कहा है कि यह मानो गुरुत्व यह पृथ्वी की रज को ले करके अञ्जली में कहो क्या प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः। **यदि प्राण के साथ में बेटा! रज के परमाणु नहीं होंगें तो मानव श्वास नहीं ले सकता, गतियों में नहीं परणित हो सकता।** तो इसीलिए वह प्राण की आहुति देता है, अभ्योदय होता रहता है। तो वेद का ऋषि कहते हैं कि प्राण को ले कर हम प्राण की आभा में रत्त होते रहें।

## हृदयरूपी यज्ञशाला में याग

आओ मेरे प्यारे ऋषि; ने जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपना वर्णन किया तो उन्होंने कहा प्रभु कहीं ऐसा हो क्या यह पृथ्वी की रज भी कहीं हमें प्राप्त न हो, तो प्रभु याग कैसे करें? उन्होंने कहा सम्भवम् ब्रह्मणे लोकाम् कृतम् देवाः। हे ब्रह्मचारी! तुम्हें यह प्रतीत होगा कि तुम न्योदा में वेद मन्त्रों का अध्ययन करते रहते हो, यदि कहीं तुम्हें देखो, पृथ्वी की रज भी प्राप्त न हो तो मानो उस समय तुम अपने मन में वेद मन्त्रों का उच्चारण करते रहो। और मानो इस प्रकार कहो क्या प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः इस प्रकार उद्गीत गाते हुए तुम आहुति दो। परन्तु देखो, मन, कर्म, वचन को एकाग्र करके बेटा! देखो, तुम उसको हृदय रूपी यज्ञशाला में तुम याग करने के लिए तत्पर हो जाओ। मेरे प्यारे! क्योंकि मैं इससे पूर्व काल में तुम्हें यह प्रगट करा रहा था क्या **प्रत्येक स्वरूप मानो अपने में समाहित हो जाता है** बेटा! प्रत्येक इन्द्रियों का विषय, बेटा! प्रत्येक तत्त्वों का जो विषय है देखो, यज्ञशाला का जितना विषय है वह भी हृदय में है और जितना अग्नि का विषय वह भी अग्नि है। मेरे प्यारे! देखो, हृदय में समाहित रहने वाला यह अभ्योदय होता रहता है। तो विचार आता रहता है कि हम मुनिवरो! अञ्जली में ले करके याग करने वाले बनें। पृथ्वी के सर्वत्र गुण भी मेरे प्यारे! देखो, हृदय में सिमट जाते हैं। मन, वचन और कर्म भी हृदय में सिमट जाता है और हृदय में ही मुनिवरो! देखो, उसका याग करो और कहो प्राण के अव्रतम् प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः—वेद मन्त्र का उद्गीत गाते रहो, वेद मन्त्रों का उच्चारण करते रहो परन्तु वेद में अभ्योदय होता रहता है। तो बेटा! उस आहुति हुत करने से तुम्हारा हृदय रूपी जो यज्ञशाला है इसमें कितनी प्रगति हो जाएगी मानो देखो, **बाह्य जगत को जानने के पश्चात् ही मानव अन्तर्मुखी होता है** और अन्तर्मुखी हो करके मुनिवरो! देखो, वह याग करता है। **अन्तर्मुखी हो करके हृदय में समन्वय हो जाता है**

**और वही हृदय का समन्वय मेरे प्यारे! प्रभु से होता है।** तो मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! मानो तुम देखो, यह याग करने वाले बनो। तुम मन से याग करो, कर्म से करो, वचन से करो परन्तु देखो, याग अपने में महान् स्वरूप माना गया है इसके ऊपर महानता का वर्णन करते हुए ऋषि-मुनियों ने अपनी अपनी आभाएँ प्रगट की हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ, केवल यह क्या प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए, प्रत्येक मेरी पुत्री को याज्ञिक बनना चाहिए जिससे मुनिवरो! देखो, याग अपने में महान् है। जैसे मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ क्या अवृत्ति **माता मदालसा ने यह कहा था अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रभु! मैं याग कैसे करूँ?** उन्होंने कहा तुम याग इसी प्रकार करते रहो। परन्तु यदि तुम्हारे गर्भस्थल में किसी आत्मा का, शिशु का प्रवेश हो गया है तो मानो देखो, प्राण, अपान को, दोनों को एक सूत्र में ला करके तुम अपनी गर्भ की आत्मा से, शिशु से वार्त्ता प्रगट कर सकती हो, वह भी एक याग है। क्योंकि वह मानो प्राण का याग हो रहा है, अपान का और व्यान का याग हो रहा है, व्यान और प्राण का याग हो रहा है। **मेरे प्यारे! देखो, इस विषय में प्राण होने का नाम ही बेटा! याग माना गया है।**

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करूँगा। आज का हमारा अभिप्रायः यह महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों से कहते हैं कि तुम प्रत्येक दशा में याज्ञिक बनो और याग करने वाले बनो क्योंकि याग ही तुम्हारी मौलिकता मानी गई है और याग ही तुम्हारा एक ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप माना गया है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है–हम परमपिता परमात्मा की आराधना करें और जो मानो देखो, याज्ञिक नहीं बनता है, जो गुरुता के सम्बन्ध में अपने अन्तर्हृदय को ले जाता है बेटा! वो उसकी वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, उसका दध्याम् भू वर्णम ब्रह्मा लोकाम्। आओ, मेरे प्यारे! महानन्द दो वाक् उच्चारण करेंगें।

## पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् देवाम् भद्रम् मना वाचश्वन्धना।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे और गागर में सागर का भरण कर रहे थे दूसरे रूपों में। परन्तु आज का यह जो समाज जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक साम याग का गान का याग सम्पन्न हुआ। मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है और मैं यजमान के लिए मेरा अन्तरात्मा यह उद्‌गीत गाता रहता है कि हे यजमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। क्योंकि जिन गृहों में द्रव्यों का सदुपयोग होता है उन गृह में द्रव्य की हानि नहीं होती और जिस गृह में द्रव्य का ह्रास होता है, द्रव्य का दुरूपयोग होता है उस गृह से द्रव्य चला जाता है। मानो वह द्रव्य हीन बन करके अपने कर्त्तव्य को मन ही मन में उद्‌गीतता में गाने लगता है। तो इसीलिए यजमान के साथ में मेरा अन्तर्हृदय रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे और इससे ऊर्ध्वा में कोई सदुपयोग नहीं होता जो याग करता है। क्योंकि याग में जो साकल्य है वह वायुमण्डल में जाता है और जो शुद्ध और पवित्र शब्द होता है वह भी द्यौ लोक को चला जाता है और द्यौ में वह सिद्ध हो करके गमन करता रहता है। इसीलिए मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का इस याग के सम्बन्ध में इनका बहुत बड़ा अध्ययन रहा है। क्योंकि बाल्य काल से भी पुरातन कालों से अमूल्य निधि रही है और यह अपने में मानो देखो, वेद का उद्‌गीत गाते रहते हैं, हमारा अन्तर्हृदय भी इसी से पवित्र रहता है।

### भगवान् राम का काल

आज मैं देखो, पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन करा रहा हूँ क्या राम के काल में भी प्रत्येक गृह में राम ने यह घोषणा की थी मेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होने चाहिए, प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए।

विचारों की सुगन्धि और मुनिवरो! देखो, साकल्य की सुगन्धि, दोनों होनी चाहिए। विचारों की सुगन्धि वह होती है जो विचारों को पवित्र बनाती है। उद्गीत गाने वाले हैं देखो, विचारों की सुगन्धि से ही देखो, साकल्य की सुगन्धि याग के द्वारा होती है। तो जब दोनों सुगन्धि होती हैं तो प्रदूषण नहीं होता। किसी राजा के राष्ट्र में राजा को यह विचारना है कि मेरे राष्ट्र में मानो प्रदूषण नहीं होना चाहिए। समाज में विचारों का प्रदूषण न हो तो एक-दूसरे में महान् बने। विचारों की और साकल्य सुगन्धि में सुगन्धित हो जाएँ और द्रव्य का सदुपयोग होने लगे तब राजा के राष्ट्र में या समाज में देखो, कहीं भी देखो, दुरूपयोग नहीं रहेगा और प्रदूषण की उत्पत्ति नहीं हो सकेगी।

## आधुनिककाल का समाज

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ क्या आधुनिक काल का यह जो समाज चल रहा है इसे भी वाम मार्ग का युग कहता रहता हूँ, मैं इसे श्रेष्ठ युग नहीं कहा करता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैं आपको निर्णय कराऊँ क्या आज का तो राजा भी वाममार्गी है, प्रजा भी वाममार्गी है। वाम मार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करता है। तो इसीलिए राजा भी सुरा पान कर रहा है, प्राणियों के रक्त का पान कर रहा है। मानो देखो, राजा अपने स्वार्थ में लगा हुआ है क्योंकि राजा को निस्वार्थी होना चाहिए। राजा के राष्ट्र में न्यायलय में एक स्थली में उसका पुत्र न्यायलय में है और एक प्रजा का पुत्र न्यायलय में है तो दोनों ही राजा के लिए एक तुल्य होने चाहिए। यदि उसमें ममता आ गई तो राष्ट्रीय प्रणाली का विनाश हो जायेगा। और यदि मानो देखो, प्रजा को न्याय नहीं प्राप्त होता तो वहाँ भी पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते हैं वहाँ भी देखो, विनाशता की वृत्तियाँ उत्पन्न होने लगती हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में यह कहा क्या राजा के राष्ट्र में रूढ़ी नहीं होनी चाहिए। क्योंकि रूढ़ि राजा के विनाश का एक मूल बनती है, प्रजा का मूल बन जाती हैं। क्योंकि मैंने पुरातन काल में कहा राजा को अपने राष्ट्र को

ऊँचा बनाना है तो राजा के राष्ट्र में भिन्न-भिन्न प्रकार की रुढ़ि नहीं होनी चाहिए। आज एक मानव देखो, रूढ़िवाद में बना हुआ है, एक दूसरा मानव मानव के रक्त का पिपासी है। उसके मूल में ईश्वर के नाम पर भिन्न-भिन्न रुढ़ियाँ बनी हुई हैं क्योंकि यदि रूढि नहीं होगी तो रक्त का पिपासी नहीं होगा। देखो, वह दीर्घ ब्रह्मे एक ही विचार का मानो देखो, आचार्यों की पद्धति होनी चाहिए जिससे बुद्धिमान और राजा जब ब्रह्मवेत्ता होता है तो राष्ट्र ऊँचा बनता है और प्रजा उसके अनुसार बरतने लगती है।

राजा यह चाहता है कि मेरा राष्ट्र पवित्र बने, एक दूसरा मानो रक्त का पिपासी न हो तो राजा ब्रह्मवेत्ता बन करके और अश्वमेध याग करने वाला हो, और अश्वमेध याग करने वाला जो राजा होता है, वह राष्ट्र और प्रजा को, दोनों को....। तो विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ क्या प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित किया जाए और जो धर्म, मानवीयता और विज्ञान पर जो विचार स्थिर हो जाए उसे अपने में अपनाना चाहिए, यह राजा का कर्त्तव्य है। क्योंकि राजा को ब्रह्मवेत्ता होना बहुत अनिवार्य है, यदि राजा ब्रह्मवेत्ता नहीं होगा तो राष्ट्र को उन्नत नहीं बना सकेगा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो भिन्न-भिन्न प्रकार की वार्त्ताएँ प्रगट करते रहते हैं और आज उन्होंने गागर में सागर की कल्पना करते हुए एक-एक शब्द में गागर विद्यमान है। और **गागर में वही सागर है जो मानो देखो, ऋषि-मुनियों की परम्परा की पद्धतियाँ मानी जाती हैं।** परन्तु देखो, हे मेरे पूज्यपाद! गुरुदेव मैं आधुनिक काल के राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहा हूँ, यहाँ कोई मोहम्मद के मानने वाला है तो ईसा का शत्रु है। ईसा के मोहम्मद के मानने वाला है तो मानो वह अनन्यों का शत्रु बना हुआ है। परन्तु धर्म की प्रणाली को न जान करके, धर्म को न जान करके मानो देखो, यह रूढ़ियाँ अधर्म में परणित हो जाती हैं। विचार आता रहता है यह एक-दूसरे की रक्त की पिपासी बन जाती हैं। तो मैं अपने पूज्यपाद

गुरुदेव से यह कहता रहता हूँ हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! यह जो रूढ़ियाँ हैं इन रुढ़ियों को राजा को विनाश करना चाहिए यदि अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना है, समाज को सुखद बनाना है। अपनी पुत्रियों के शृङ्गार की रक्षा करनी है तो मानो देखो यह रुढ़िवाद समाप्त होना चाहिए। यह जो ईश्वर के नाम पर रुढ़ियाँ हैं यह रुढ़ि नहीं रहनी चाहिए।

देखो, एक ही धर्म है। देखो, पूज्पाद गुरुदेव इससे पूर्व कालों में प्रगट कर रहे थे कि इन्द्रियों का जो विषय है वही धर्म है। परन्तु देखो यह सब के साथ रहता है और जब वृत्तम् ब्रह्मा मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा लेता रहता हूँ और इनके चरणों में बहुत समय तक अध्ययन किया है परन्तु देखो, धर्मणं एक है और रुढियाँ अनेक होती हैं। अनेकता को देखो, रूढ़ि में वर्णित नहीं किया जा सकता। वह एकता में, धर्म में रहता है और रुढ़ियाँ न रहती हैं इसीलिए रूढ़ियों का विनाश हो और धर्म की रक्षा हो और देखो, यह जो रूढियाँ हैं इनका विनाश हो जाएगा तो राष्ट्र पवित्र बन जाएगा। प्रजा में महानता छा जाएगी। तो इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उद्गीत गाता रहता हूँ। आज का देखो, जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वही गृह पवित्र होता है। क्योंकि द्रव्य ही गृह को बलवती बना देता है। वह द्रव्य वहाँ से चला जाता है और मानो देखो, अपने अन्तःकरण में पापाचार की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो गई थीं जहाँ द्रव्य का दुरूपयोग हुआ वह अपने में हिंसक बन जाता है और विचारता रहता है कि मैं कहाँ चला गया हूँ। तो इसीलिए विचारो कि द्रव्य का सदुपयोग हो और देखो, यह समाज ऊँचा बने।

मेरे यजमान मैं पुनः से कहता हूँ हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे जीवन में महानता की बलवती होती रहे। इसके साथ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मानो क्षमा चाह रहा हूँ, मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ। क्योंकि रूढि जब तक विनाशता को समाप्त नहीं होंगी जब तक वह समाज किसी भी राष्ट्र का रहने वाला

हो, चाहे वह लोक-लोकान्तरों का रहने वाला हो... क्योंकि रावण के राष्ट्र में भी रुढ़ियाँ बन गई थीं राम ने उनका विनाश किया। इसी प्रकार देखो, रुढ़ि नहीं रहनी चाहिए और रुढिवाद जब तक समाप्त नहीं होगा और ब्रह्मज्ञानी जब तक राजा नहीं होगा, जब तक समाज उन्नत नहीं होगा। इसीलिए आज का विचार अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

## पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने उद्‌गार दिए। इनके उद्‌गारों में मानो एक विड़म्बना है, राष्ट्रीयता की दाह बनी रहती है। मैं सदैव यह कहता रहता हूँ कि यह समय भी प्रायः आएगा जब मानव एक सूत्र में सूत्रित हो जाएगा। विचार आते रहते हैं, बनते रहते हैं और वह विस्मृत होते रहते हैं। मानो वह स्मरण शक्तियों में भी आते रहते हैं, वह उद्‌गीत गाए जाते हैं परन्तु वहीं नष्ट हो जाते हैं। तो अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने कहा राजा ब्रह्मवेत्ता हो महाराजा अश्वपति की भाँति, राजा जनक की भाँति देखो, ब्रह्मवेत्ता हो और देखो, अनेक रुढ़ियाँ समाप्त हों और धर्म एक ही वचन कहा जाता है। तो इसीलिए आज का विचार-विनिमय क्या **हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए और अपने में मानो याज्ञिक बन करके अपने द्रव्य का सदैव सदुपयोग करते रहें।** तो यह आज का विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

**दिनाँक :**
**समय :** } अनुपलब्ध
**स्थान :**

॥ ओ३म् ॥

# ऋषि-मुनियों के उद्‌गार

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ये पठन-पाठन की प्रतिक्रियाएँ हैं और हमारे मानवीय मस्तिष्कों में सदैव रत्त रही हैं। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की पठन-पाठन की प्रतिक्रियाएँ परम्परागतों से ही विचित्र मानी गई हैं। मानो जैसे हमारे यहाँ माला पाठ का वर्णन आता है तो हमारे यहाँ माला पाठ प्रत्येक शब्दों की प्रतिभा में निहित रहता है। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा ने जब इस मानवीयता का निर्माण किया तो मानव के मस्तिष्क में एक ऊर्ध्वा में एक ध्वनि हुआ करती है जिस ध्वनि में ध्वनित होता हुआ बेटा! योगेश्वर उस ध्वनि को श्रवण करता रहता है और उसमें आनन्दवत का ग्रहण करता है। तो उसी ध्वनि को जब बाह्य जगत में लाया जाता है तो वहाँ वेद मन्त्रों का वो उद्‌घोष करता है और वेद मन्त्रों को अपना स्वर और व्यञ्जन देता रहता है। मानो वह शब्दों की प्रतिभा में सदैव निहित रहता है जैसे माला और नाना प्रकार के मनके और धागों का, दोनों का समन्वय होता है तो एक माला कहलाती है। इसी प्रकार प्रत्येक शब्द को मानो धारा में रत्त कराना और उसको ध्वनि में ध्वनित करने का नाम एक माला के रूप में परणित हो जाता है अथवा वह माला हमें दृष्टिपात आने लगती है। तो ये संसार जितना भी हमें प्रायः दृष्टिपात आ रहा है वो एक माला के सदृश–किसी भी प्रकार की योनि हो, किसी भी प्रकार की आभा हो वह एक-दूसरे में पिरोयी हुई है और एक-दूसरे में निहित होती

दृष्टिपात आती है। मानो यदि उसमें एक-दूसरे में प्रतिभाषित नहीं होगी तो ये संसार माला के रूप में दृष्टिपात नहीं आ सकेगा। शिल्पकार यज्ञशाला का जब निर्माण करता है तो वो भी मानो एक प्रकार के रूपों को रूप देता चला जाता है, तो वो माला बन जाती है। जैसे यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह याग करता है और वह **याग करता हुआ अपने हृदय और प्राण और मनस्तत्त्व मानो देखो जब तक ये संतुलित नहीं होते तब तक वह याज्ञिक अपनी यज्ञशाला में सफलता को प्राप्त नहीं होता है।**

## महर्षि लोमश और काग्भुषण्ड जी का चिन्तन

बहुत पुरातन काल हुआ बेटा! एक समय महर्षि लोमश और काग्भुषण्ड जी का भी इस सम्बन्ध में कुछ विवाद हुआ। बहुत से विचार-विनिमय होते रहे हैं। तो महर्षि काग्भुषण्ड जी ने ये कहा कि भगवन्! जब यजमान यज्ञशाला में याग करता है और मन की प्रतिभा यदि स्वाहाः से गुथी हुई नहीं है तो उसका कोई प्रतिफल होता है? तो उस समय महर्षि ने ये कहा क्या उसका प्रतिफल नहीं होता। **जब मनस्तत्त्व कहीं रूप में रहता है और क्रिया कहीं हो रही है तो वो क्रिया का मन और आत्मा से कोई समन्वय नहीं होता।** परन्तु समन्वय जब ही होता है जब एक-दूसरे में मानो वो पिरोयी हुई रहती है। मन प्राण में, प्राण क्रिया में और क्रिया द्यौ में जब तक नहीं होती जब तक वो याज्ञिक मानो देखो याग सफलता को प्राप्त नहीं होता। मेरे पुत्रों! देखो ये काग्भुषण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज का ये विचार-विनिमय होता रहा है। आज मैं इस सम्बन्ध में तो कोई विवेचना तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये कि हमारे जो मन, सूत्र के जो मनके हैं वो महान् होने चाहिए। जब तक मनके और सूत्र दोनों का समन्वय नहीं होगा तो वो माला नहीं कहलाएगी। इसलिए हमें माला बनानी है और माला को अपने में धारण करना है।

जैसे राष्ट्र के यहाँ जब राजा के यहाँ से चरित्र का अभाव हो जाता है तो वह उसका सूत्र चला जाता है क्योंकि **राष्ट्र का भी यदि कोई सूत्र है तो वह उसका चरित्र है उसकी प्रतिभा है।** परन्तु यदि समाज और राष्ट्रीयता से चरित्र चला गया है तो उसका प्राण समाप्त हो गया है, मानो उसका सूत्र समाप्त हो गया है। इसलिए हमें उस सूत्र को अपने में धारण करना है जिस सूत्र को सूत्रित हो करके मानव इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करता है। जैसे मानो देखो यज्ञशाला में ब्रह्मा विद्यमान होता है, ब्रह्मा अपनी क्रियाओं से और अपना मनस्तत्त्व मानो होताजन और वेद मन्त्रों की प्रतिभा में जब निहित रहता है तो देखो उसके ब्रह्मत्त्व का मानो अस्तित्त्व होता है और यदि ब्रह्मा का यज्ञशाला के होताओं और उस यजमान के प्रति ध्यानम् उसका मनस्तत्त्व नहीं होता, प्राण क्रिया वेद मन्त्रों में नहीं होती तो मानो देखो उसके उसका अस्तित्त्व समाप्त हो जाता है। वह माला को नहीं धारण कर रहा है, वह माला से विमुख होने जा रहा है। इसलिए हमारे आचार्यों ने कहा है कि जो भी तुम क्रिया में अपने को लाना चाहते हो तो वह मन, कर्म, वचन मानो सर्वत्रता में एकोरस हो करके अपने में क्रियाकलाप होते चले जाओ।

## शिकामकेतु ऋषि महाराज और उनकी पत्नि का विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश

मेरे पुत्रों! आओ मैं आज तुम्हें मानो देखो उद्दालक गोत्र में ले जाना चाहता हूँ। महर्षि उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए हैं क्योंकि **हमारे यहाँ उद्दालक गोत्र में लगभग दस हजार पाँच सौ बयालीस मानो वंशलज हुए हैं।** उन वंशलजों का नामोकरण है परन्तु गोत्र केवल वह उद्दालक गोत्र कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो उद्दालक गोत्र में एक शिकामकेतु ऋषि हुए हैं। शिकामकेतु ऋषि और उनकी पत्नी सोमवृत्तिका मेरे पुत्रों! देखो दोनों अपने गृह में याग करते थे।

याग करते-करते मानो देखो! उनके हृदय में क्योंकि **याग का जो प्रतिफल होता है वह दो प्रकार का होता है**–एक श्रोत्रिय कहलाता है, एक मानो वृहीवास कहलाता है। तो मेरे प्यारे! वह जो वृहीवास क्रिया है वह महान् विज्ञान से उसका समन्वय होता है और श्रोत्रिय इस संसार के क्रियात्मक जीवन से होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो दोनों अपने में जब अन्वेषण करते, विचार-विनिमय करते तो उनका विचार आन्तरिक जो जगत था वो विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो जाता और विज्ञान में वो रत्त होने लगते। तो एक समय उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! अब तो हम यहाँ से गृह को त्याग करके भयङ्कर वनों में जा करके यदि अपने याग को सम्पन्न करेंगे तो हमारा याग सम्पन्न हो सकेगा। तो मुनिवरो! देखो उन्होंने कहा देवी बहुत प्रियतम्। तो शिकामकेतु ऋषि महाराज और वह देवी जी मुनिवरो! देखो भयङ्कर वनों में जा पहुँचे, दण्डक वनों में। तो जब वनों में जा पहुँचे तो वहाँ वे साकल्य एकत्रित करते और साकल्य को ले करके कामधेनु गऊ उनके द्वारा थी उसके **धृत के द्वारा, दुग्ध के द्वारा वो प्रायः याग करते रहते थे।** जब वो याग करते तो बेटा! याग में जब विद्यमान हो करके अपने में चिन्तन और मनन करते। मानो जो याग में तरङ्गें उत्पन्न होती थीं उन तरङ्गों के साथ अपने मनस्तत्त्व को मानो ले जा करके उस पर अन्वेषण करते रहते थे। अन्वेषण करते हुए ऐसा कुछ स्मरण आ रहा है पुत्रों! आज क्या मानो देखो जब याग में याग के पश्चात् जब तरङ्गों के ऊपर वो अपने में ले जाते तो मुनिवरो! देखो यज्ञशाला भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं। हमारे यहाँ चौबीस कोणों से द्वि-कोणों तक की यज्ञशालाओं का निर्माण हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो जब याग करने वाला याज्ञिक बनकर के इस प्रकार का वो याग करता है जैसे अग्निष्टोम याग है और वाजपेयी याग है, आनमूब्रह्मे अजामेध याग है, अश्वमेध याग है भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चलन हमारे वैदिक साहित्य

में आता रहता है। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं दूँगा। केवल विचार-विनिमय क्या कि हमारे यहाँ यागों का जो विज्ञान है ये महान् परम्परागतों से बड़ा विचित्र रहा है। ऋषि मुनियों ने इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया क्योंकि याग का प्रकरण वैदिक साहित्य में मन्त्रार्थों में आता रहा है। क्योंकि देखो उन मन्त्रों में कहीं कन्या याग का वर्णन है, कहीं देवी याग का वर्णन है, कहीं मानो चन्द्रसूक्ति का वर्णन है भिन्न-भिन्न प्रकार के जैसे विष्णु, रुद्र और ब्रह्म याग का वर्णन आता रहा है। तो मेरे पुत्रों! देखो शिकामकेतु ऋषि महाराज उनकी पत्नी मानो उनके आश्रम में कुछ ब्रह्मचारी याज्ञिक आते रहे वे भी अन्वेषण करने लगे। मुनिवरो! देखो जैसे तरङ्गें उत्पन्न होतीं उन तरङ्गों के ऊपर बेटा! वे विचार करते उन्होंने बेटा! एक सूक्ष्म विज्ञान के यन्त्रों का भी निर्माण किया। क्योंकि वेद मन्त्रों में आता रहता था चित्रम् भविता देवो यज्ञम् ब्रव्हा व्रते। मेरे पुत्रों! देखो वेदों में ये आता रहा कि चित्रों को हम चित्रों में दृष्टिपात करना चाहते हैं। तो मुनिवरो! देखो वह ऋषि वेद मन्त्र को ले करके परमाणुओं और साकल्य को ले करके मुनिवरो! देखो विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश कर गए और विज्ञान के जब वाङ्मय में पहुँचे तो मानो वहाँ तरङ्गें दृष्टिपात होने लगीं। वे तरङ्गों में तरङ्गित दृष्टिपात करने लगे। तो मेरे प्यारे! उन्होंने एक यन्त्र का उन्होंने निर्माण किया था। इस यन्त्र को **चित्रावली धामकेतु** यन्त्र कहते थे।

मेरे पुत्रों! देखो यज्ञशाला में जैसे याग करते तो दोनों यन्त्रों को स्थिर कर लेते। मानो देखो यन्त्रों में उनके चित्र आने लगे। आगे उन्होंने उसके ऊपर अन्वेषण, अनुसन्धान किया तो मुनिवरो! देखो उनके चित्र वायुमण्डल में दृष्टिपात आने लगे। तो विचारते-विचारते बेटा! जब बहुत अनुसन्धान किया तो ऐसा कुछ प्रतीत है बेटा! क्या उन्हें मुनिवरो! देखो अपने पितरों के भी दर्शन होने लगे, मानो देखो पित्रोहा सम्भवा। मेरे प्यारे! देखो जो पितरजन उनके जो शब्द थे

अन्तरिक्ष में विद्यमान थे उनके चित्र! मानो देखो यन्त्र में दृष्टिपात होते हुए दृष्टिगोचर होते हुए वे अपने में भान करने लगे क्या ये तो हमारे पितरजन हैं। उनके क्रियाकलाप उनका मानो देखो शब्द और आकार मुनिवरो! देखो उनके यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगा। तो मुनिवरो! देखो शिकामकेतु एक समय मध्यरात्रि में अपनी पत्नी से बोले देवी ये जो यन्त्रवाद है ये क्या है तुम्हारे विचार में कुछ आता है? देवी ने कहा प्रभु! जैसा हमारा मानो विचार बना है उस अनुभव को हम उच्चारण कर सकते हैं। उन्होंने कहा देवी अपना अनुभव उच्चारण करो। तो मेरे पुत्रों! देवी ने कहा प्रभु हमारे यहाँ जो वेद मन्त्रों में जो भी विज्ञान आता है उस विज्ञान का साकार रूप ही बनाना है, उसको साकारता में लाना है। क्योंकि इसलिए हमारे यहाँ एक शब्द  की प्रतिभा में ये आता है क्या मानव को शब्द यथार्थ उच्चारण करना चाहिए, शब्द में मार्धुयता होनी चाहिए। शब्द को ये विचार लेना चाहिए कि कहीं-कहीं शब्द यथार्थ है परन्तु उसके उच्चारण करने से मिथ्यावाद भास होता है उसको भी हमें उद्गीतता में नहीं गाना चाहिए। ऐसा मानो उनकी पत्नी ने कहा। तो उन्होंने कहा देवी यथार्थ वाक् है। परन्तु उन्होंने कहा कि इसलिए वेद मन्त्र ये कहता है चित्रम् भविता चित्रम् द्यौ-लोकाम् चित्रम् अग्नम् ब्रह्मा चित्रम् रथम् वायु। मानो देखो ये जो वायु है ये अग्नि की तरङ्गों में अग्नि के ऊपर जब अस्वार हो करके शब्द ये गति करता है तो इसको वायु गति देता है और वायु गति दे करके अन्तरिक्ष में मानो देखो ये ओत-प्रोत हो जाता है, अन्तरिक्ष में स्थिर हो जाता है। वह जो अन्तरिक्ष में हमारे पिता महापिताओं के चित्र गतियाँ कर रहे हैं उनको हम यन्त्रों के द्वारा दृष्टिपात कर सकते हैं इसमें कोई ऐसा आश्चर्य नहीं है। तो मेरे प्यारे! देखा जब ऋषि पत्नी ने ये वाक् कहा तो ऋषि बोले कि देवी वाक् तो तुम्हारा बड़ा यथार्थ है, प्रियतम है परन्तु इसके ऊपर और अनुसन्धान किया जाए। तो बेटा! देखो

विचारने लगे। तो विचारते-विचारते उन्होंने बेटा! देखो अपने यन्त्रालयों में उसी यन्त्रों में बेटा! अपने पचासवें महापिता के दर्शन करने लगे। एक पिता नहीं, दो पिता नहीं बेटा! जो अन्तरिक्ष में उनका क्रियाकलाप हो रहा था शब्दों के साथ उनके चित्र बन-बन करके बेटा! उन यन्त्रों में प्रवेश होते हुए दृष्टिपात होने लगे। मानो देखो उसमें उनका क्रियाकलाप, उनकी मग्नता, उनकी ओजस्ता, उनके जो भी कुछ क्रियाकलाप थे वह उनके चित्रों में दृष्टिपात आने लगे।

## माता सोमवृत्तिका और ऋषि द्वारा तप की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो शिकामकेतु ऋषि बोले, क्या हे देवी! हमें तप करना चाहिए, हमें तपों में प्रवेश हो जाना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो तपो ब्रह्म वव्हा ऋषि ने कहा कि देवी तुम जानती हो तप किसे कहते हैं? तो देवी ने कहा प्रभु मेरे विचार में ये आता है क्या **तप कहते हैं–इन्द्रियों को तपाने का नाम तप है** और इन्द्रियों को जब तक हम सुसज्जित नहीं बनाते जब तक मानो देखो हम तपस्वी नहीं बन सकते। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा देवी आज हम अपनी इन्द्रियों का साकल्य बनाना चाहते हैं जैसे नाना प्रकार का साकल्य हम एकत्रित करके मानो सामग्री के रूप में अग्नि को अर्पित कर देते हैं वह अग्नि उसका भेदन करके सूक्ष्म बना करके अन्तरिक्ष में प्रवेश कर देती है इसी प्रकार हम भी अपनी इन्द्रियों का साकल्य बनाना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने देखो रूप, रस, गन्ध इत्यादि को एकत्रित करना प्रारम्भ किया। मेरे प्यारे! देखो नेत्रों से रूप लिया, घ्राण से मन्द सुगन्ध लई और देखो श्रोत्रों से शब्द लिया, त्वचा से प्रीति ली मानो देखो इसी प्रकार रसना से रस ले लिया। रस ले करके इनका सबका साकल्य बनाया। साकल्य बना करके मुनिवरो! देखो उसे प्राण सूत्र में साकल्य को पिरोना प्रारम्भ किया। वह जो ज्ञानरूपी अग्नि हमारे अन्तर्हृदय में जो प्रदीप्त हो रही है उस अग्नि में मुनिवरो! देखो योगीजन समाधिष्ठ हो करके बेटा! उसमें आहुति देना प्रारम्भ कर देता

है। जब उसमें आहुति दई तो मुनिवरो! देखो वो सोमता को प्राप्त हो गए। वह मानो देखो हृदयरूपी यज्ञशाला में याग हो रहा है। कैसा प्रिय याग कर रहा है योगीजन मेरे प्यारे! देखो अपनी यौगिकता को प्राप्त कर रहा है। वह जब उसमें साकल्य अर्पित करके याग करता है, उसमें समाधिष्ठ होता है तो मेरे प्यारे! वह ज्ञानरूपी अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। वही ज्ञानरूपी अग्नि बेटा! मानो प्रदीप्त हो करके ही मुनिवरो! देखो सर्वत्र अन्तरिक्ष, सर्वत्र जो जगत है ये मुनिवरो! देखो योगीजन अपने में दृष्टिपात करने लगता है। अपने में ही और अपने को उस मानो बाह्य जगत में और बाह्य जगत अन्तरिक्ष में, आन्तरिक जगत में जब प्रवेश कर देता है तो बेटा! उस मानव की मानवीयता! विचित्र बन जाती है, यौगिकता उसके समीप आनी प्रारम्भ हो जाती है। तो मानो इसी प्रकार मानो शिकामकेतु ऋषि महाराज उनकी पत्नी अपने में अनुसन्धान करते हुए अपने में इन्द्रियों का साकल्य बना करके जैसे वह अपने पितरों का दर्शन कर रहे थे ऐसे बेटा! देखो अन्तर्हृदय में साकल्य को परणित करने से, हृदयरूपी यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त करने से, ज्ञानरूपी अग्नि का भान होने से बेटा! प्रभु का दर्शन होता है। प्रभु की प्रतिभा हमें दृष्टिपात होने लगती है।

## शिकामकेतु ऋषि महाराज को विज्ञान की प्रेरणा

मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या हमारे यहाँ उद्दालक गोत्रीय ऋषियों में नाना प्रकार के ब्रह्मवेत्ता और विज्ञानवेत्ता हुए हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो एक समय वो दोनों पति-पत्नी मानो देखो अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान थे। एक समय बेटा! देखो महर्षि वैश्नव्रेतकेतु ऋषि महाराज के यहाँ कुछ ऋषि-मुनियों का आगमन हुआ और कुछ ऋषि-मुनि मानो भ्रमण करते हुए वह मुनिवरो! देखो शिकामकेतु ऋषि के द्वार पर पहुँचे। क्योंकि वे भी श्रोत्रिय बुद्धिमान थे, वे वेद के वेदज्ञ थे। तो मुनिवरो! देखो उन्होंने जा करके उनके चरणों की वन्दना की। चरणों को स्पर्श करके

विद्यमान हो गए। उन्होंने उनका अतिथि किया, कहा तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा हे भगवन् हमारा आगमन इसलिए हुआ कि हम वेदों का अध्ययन कर रहे थे और वेदों का अध्ययन करते हुए कुछ साहित्यिक संसार के ऋषि-मुनिवरों की वंशावलियों को भी अध्ययन में ला रहे थे परन्तु हमने श्रवण किया है क्या तुम्हारा विज्ञान बड़ा पारायण, बड़ा महानूता में गति कर रहा है तो प्रभु! हम उस आपके विज्ञान को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों को दृष्टिपात कराते हुए कहा क्या ये मानो देखो हमारे पितरों का दर्शन हो रहा है। ये शब्दः ये शब्दों को यन्त्र अपने में ग्रहण करता है और शब्दों के साथ में चित्र आता है हम उन चित्रों को अपने में दृष्टिपात कर रहे हैं। मेरे पुत्रों! जब ऋषियों ने मानो देखो वैश्मब्रही ने जब ये दृष्टिपात किया तो वे बड़े आश्चर्य में हो गए। मेरे पुत्रों! उन्होंने पिता, महापिता, पड़पिताओं के बेटा! मानो पचासवें महापिता का दर्शन किया। उन्होंने कहा कि हम अपनी विज्ञानशाला में, अपनी स्थलियों में हम मानो सौवें महापिता का भी दर्शन कर लेते हैं। हम मानो देखो यन्त्रों में उनके शब्दः, उनकी प्रतिक्रियाएँ, उनका दर्शनों का अभ्यास मानो देखो हमारे यन्त्रों में दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! जब उन्होंने ये दृष्टिपात किया तो ऋषि ने कहा हे भगवन्! हे शिकामकेतु ऋषि महाराज! आपका जो ये वंशलज है, मानो तुम्हारा जो ये वंशलज है ये बड़ा विचित्र माना गया है। इस मानो देखो उद्दालक गोत्र में कोई भी वंशलज ऐसा नहीं हुआ है जो इतने ऊर्ध्वा के विज्ञानवेत्ता को जानने वाला हो। तुम्हारा विज्ञान अपने में बड़ा अनूठा हमें दृष्टिपात आ रहा है। हमारे विचारों में जो आ रहा है ये एक बड़ा अनूठा है परन्तु तुम्हारा वंशलज, तुम्हारा जो उद्दालक गोत्र है इस उद्दालक गोत्र में सब ब्रह्मवेत्ता हुए हैं, ब्रह्मनिष्ठ हुए हैं, ब्रह्म की चर्चा करने वाले हुए हैं परन्तु कोई ऐसा मुझे दृष्टिपात नहीं हुआ अब तक जो इस प्रकार के विज्ञान को जानने वाला हो। ये विज्ञान की प्रेरणा तुम्हें कहाँ से प्राप्त हुई है, ये

भौतिक विज्ञान है, भौतिकवाद भी चरम आभा में रत्त करने वाला है परन्तु ये प्रेरणा तुम्हें कहाँ से प्राप्त हुई है? मेरे प्यारे! देखो जब शिकामकेतु ऋषि महाराज से ऋषि ने ये वाक् प्रगट किया, अपरो में प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि माता और पिता इसके प्रेरक होते हैं, इसके मूल में माता-पिता होते हैं।

मानो देखो एक समय जब मैं बाल्यकाल में था, शिकामकेतु कहते हैं जब मैं बाल्यकाल में था तो मेरे जो पिता थे मेरे पितर का नाम स्वाङ्गकेतु ऋषि महाराज था। स्वाङ्गकेतु उद्दालक एक समय मानो देखो माता-पिता दोनों प्रातःकालीन याग कर रहे थे। जब याग कर रहे थे तो याग में अपनी ध्वनि को ध्वनित करते हुए एक समय माता जब वेदों का गान गाने लगी, मानो प्रारम्भ में ही जब प्रार्थना प्रभु की होने लगी तो वाक् मिथ्या उच्चारण कर दिया। एक वेद का मन्त्र उसमें कुछ आख्यायिकाएँ अशुद्ध हो गयीं। जब वह अशुद्ध हो गयीं तो मेरे पितर ने कहा देवी शान्त। मेरे प्यारे! देखो माता शान्त हो गयी। माता से कहा देवी! जो तुमने अभी-अभी वेद मन्त्र का उद्घोष किया है ये अशुद्ध है। क्योंकि हम जब देवताओं का प्रत्येक वेद मन्त्र में आह्वान करते हैं और उसमें एक शब्द यदि अशुद्ध हो जाता है तो उसकी आह्वान की प्रतिक्रिया समाप्त हो जाती है, उसकी प्रतिक्रिया में मानो देखो तारतम्य समाप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो माता ने वो वाक् स्वीकार किया और ये कहा हाँ देव ऐसा ही है। तो मुनिवरो! देखो क्योंकि जो शब्द को हम उच्चारण कर रहे हैं वो शब्द हमारा अन्तरिक्ष में जाता है, अन्तरिक्ष में वो अशुद्ध परमाणुओं को निगलता है, अशुद्ध शब्दों को निगल जाता है अपना शुद्धिकरण कर लेता है। इसलिए मुनिवरो! देखो हमारे ऋषि-मुनियों ने ये कहा है क्या वायुमण्डल को पवित्र बनाना है तो वाणी पवित्र होनी चाहिए। **वेदों का उद्घोष पवित्र होना चाहिए, मानो उसमें मन, कर्म, वचन भी उसी में संलग्न होना चाहिए।**

मेरे प्यारे! देखो माता ने ये प्रश्न किया जब क्या हे भगवन्! अशुद्ध वाक् उच्चारण करना मैं तो अपने में नहीं, मानो जैसे माता का प्रिय बालक होता है और वह बाल्य अशुद्ध भाषा में अपनी उद्घोषता करता है परमात्मा उसे भी, माता-पिता, समाज भी उसे स्वीकार कर लेता है क्या मेरी श्रद्धामयी शब्द को मानो ये परमपिता परमात्मा स्वीकार या देवताजन नहीं कर पाएँगें? उन्होंने कहा देवी ये तो तुम्हारा वाक् यथार्थ है परन्तु यदि हम शुद्धिकरण करके वाक्यों का उद्घोष करेंगे तो हमारा जीवन पवित्र बनेगा, हमारे गृह का वायुमण्डल पवित्र बनेगा। मानो उन्होंने कहा कि हमारे गोत्र में तुम्हें प्रतीत है कि हमारे मानो मेरे सातवें महापिता थे मैं उनके जीवन चरित्र को आभा में लाया। मेरे सातवें महापिता का नाम ब्रितिकेतु था। तो ब्रितिकेतु एक समय भ्रमण करते हुए मानो देखो कहीं एक स्वानु ऋषि महाराज से कुछ विवाद हो गया था और विवाद होते हुए मानो देखो उसी व्यञ्जना में, उसी अग्नि में आगे जब उन्होंने गति की तो कहीं मानो देखो व्रेतकेतु मुनि महाराज, व्रेतकेतु मुनि महाराज उद्दालक अपने आप में भयङ्कार आश्रम में एक याग कर रहे थे। और वो ये चाहते थे कि मैं इस याग में परणित हो जाऊँगा तो मेरा शुद्धिकरण होगा। मानो वह योग के अभ्यास को जानते थे, मानव की तरङ्गों को भी जानते थे। जैसे उन्होंने याग प्रारम्भ किया तो मेरे सातवें महापिता भी वहाँ याग करने लगे। जब याग करने लगे तो उस याग में मेरे पितर जो मेरे पिता थे वहाँ मानो देखो उनके मन की गति चञ्चल हो रही थी, क्रोधाग्नि में परणित हो रही थी—वाद-विवाद में से पहुँचे। तो उस समय ऋषि ने कहा हे ऋषिवर! तुम जो ये मेरे यज्ञ में आहुति देने लगे हो ये बड़ा अशुद्धवाद कर रहे हो। मानो तुम्हारे मन की तरङ्गें पवित्र नहीं है इसलिए मेरा यज्ञ सफल नहीं होगा। मैं अपने वायुमण्डल को पवित्र बनाना चाहता हूँ क्योंकि यहाँ मुझे योगाभ्यास करना है। परमाणुवाद को पवित्र किए बिना मेरा योग, योग का

अभ्यास मेरा शुद्ध और पवित्र नहीं हो सकेगा। तो मानो देखो जब मेरे पिता ने ये कहा कि वाक् यथार्थ उच्चारण कर रहे हो ऋषिवर। मानो देखो उन्होंने आहुति देना शान्त कर दिया।

विचार विनिमय क्या है मानो देखो ये प्रेरणा मेरे माता-पिता से मुझे प्राप्त हुई क्योंकि ये विज्ञान के धारावाही वाक् थे। उनका जो धारावाही मानो विचार-विनिमय होता रहता था उसमें विज्ञान था, सार्थकता थी, मानवता थी। मानो देखो उसी प्रेरणा को ले करके माता ने ये कहा कि ऋषिवर आप यथार्थ उच्चारण कर रहे हैं। जब ये उन्होंने कहा तो मानो देखो मेरी सूक्ष्म-सी आयु थी। मैं माता की लोरियों का पान करने से मानो मैं उपराम हो गया था। मानो देखो द्वितामू अब्राहा मेरी आयु मानो तृतीय वर्षों की थी तब मैं माता-पिता के इन वाद-विवाद को श्रवण करता रहता था। उनकी विचारधारा को जब मैं श्रवण करता रहता तो मानो देखो एक समय मेरे पितर ने ये कहा क्या हे देवी! हमें केवल क्रियाओं में रत्त रह करके नहीं रहना हमें वैज्ञानिक भी बनना है, हमें विज्ञान, आध्यात्मिकवादी भी बनना है। प्रभु के राष्ट्र में भी पहुँचना है, आध्यात्मिकवाद में भी प्रवेश करना है। तो मेरे प्यारे! देखो जब माता-पिता ये उद्घोष करने लगे तो बाल्य अपने में उन वाक्यों को श्रवण करता रहा। अन्त में देखो ये प्रेरणा विज्ञान की मुझे मेरे माता-पिता के वाद और विवाद से उत्पन्न हुई है।

इसलिए विचार आता है कि जो माता-पिता अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहते हैं अथवा अपने बाल्य-बालिका को वो महान् बनाना चाहते हैं तो बेटा! देखो वह जो गृहपत्य नाम की अग्नि है उस अग्नि को प्रदीप्त करना चाहिए। वह गृहपत्य नाम की अग्नि क्या है? बेटा! गृह में माता-पिता अपनी शुद्ध वायु में शुद्ध अपने विचारों को उद्घोष करते रहें, दर्शनों का अध्ययन करते रहें, ब्रह्म याग में परणित रहें, लोक-लोकान्तरों की वार्त्ता करते रहें जिससे बेटा! बाल्य-बालिका जो

गृह में माता-पिता के आचरणों को अपने में ग्रहण करते बेटा! वो गृह का स्वर्ग बनाते चले जाएँ। तो मेरे पुत्रों! देखो गृह का स्वर्ग कहाँ बनता है—जब तक माता-पिता के विचारों में भव्यता नहीं आती है, पवित्रता नहीं आती, उनकी क्रियाकलापों में महान्ता नहीं आती तब तक मुनिवरो! देखो गृह को हम कदापि पवित्र नहीं बना सकते। तो हमारा देखो गृह पवित्र होना चाहिए। तो मुनिवरो! देखो ऋषि कहता है क्या उसी माता-पिता की प्रेरणा मेरे हृदय में सदैव अङ्कित रही।

## कात्यायन के गृह में शिक्षा

देखो, मैं बाल्यकाल में जब विद्यालय में प्रवेश हुआ तो विद्यालय में प्रवेश करके एक समय मानो देखो मेरे आचार्यजन सोमव्रेतकेतु एक समय भ्रमण कराने के लिए मगध राष्ट्र में पहुँचे। मगध राष्ट्र में देखो ब्रह्मचारियों के सहित विद्यालय के ब्रह्मचारी और आचार्यजन मानो देखो जब मगध राष्ट्र में पहुँचे तो वहाँ एक कात्यायन के गृह में मानो रात्रि में वास हुआ। तो कात्यायन ने ये कहा क्या भगवन्! मैं ये जानना चाहता हूँ कि तुम कौन हो? मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारियों ने कहा कि हम ब्रह्मचारी हैं। उन्होंने कहा मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम कौन? उन्होंने कहा हम ब्रह्मचारी हैं, ब्रह्मबर्चोसी हैं। उन्होंने जब द्वितीय ये प्रश्न किया क्या तुम कौन हो? तो उन्होंने कहा कि हम ब्रह्मचरिष्यामि हैं। मेरे प्यारे! जब उन्होंने चतुर्थ में ये प्रश्न किया क्या तुम कौन हो? तो उन्होंने कहा हम ब्राह्मण हैं। तब पुनः ये प्रश्न किया कि तुम कौन हो? उन्होंने कहा हम ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी ब्रह्मा, ब्रह्म की चरी को चरने वाले हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो तो कात्यायन ने ये कहा क्या महाराज ब्राह्मण कौन होता है? उन्होंने कहा ब्राह्मण वह होता है जो कण-कण में प्रभु का दर्शन करता है, मानो देखो नह ब्राह्मण कहलाता है। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी कौन होता है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह होता है जो प्रत्येक श्वास की प्रतिक्रिया को मानो

देखो अपने में व्यञ्जनों के रूप में श्वास के साथ में मानो प्रभु का दर्शन करता है, प्रभु को उसमें एक तारतम्य में लगा लेता है वह ब्रह्मचरिष्य, वह ब्रह्मचारी कहलाता है। उन्होंने कहा ब्रह्म की चरि को कौन चरता है? उन्होंने कहा ब्रह्म की चरि को ब्रह्मचारी चरता है क्योंकि जितना प्रकृतिवाद है, शून्यवाद है उसको क्रिया में दृष्टिपात करना–प्रभु से उसका समन्वय करने का नाम ही मानो देखो ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो जब ऋषि ने तो वे ब्रह्म ब्रहे वे बोले कि महाराज जब कात्यायन ने यह कहा तो ब्रह्मचारी कौन है? जब तुम देखो ब्राह्मण कण-कण में दृष्टिपात करने वाला है, ब्रह्मचारी मानो प्रत्येक श्वास की क्रिया में अपने श्वास को देखो एक सूत्र में पिरो रहा है और ब्रह्मचरिष्यामि ये कि प्रकृति को अपने-अपने में ही दृष्टिपात करके उसका बाह्य जगत में उद्घोष कर रहा है, वह ब्रह्मचरिष्यामि बन गया है। तो हे ब्रह्ममचारियों! मैं जानना चाहता हूँ क्या तुम वास्तव में ब्रह्मचारी की प्रतिक्रिया को जानते हो परन्तु ब्रह्मवाचा ब्रहे वाचन्न ब्रह्मा इसका वेद से क्या समन्वय है? ब्रह्मचर्य का वेद से क्या समन्वय है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी ही वेद है क्योंकि वेद नाम प्रकाश है और ब्रह्मचारी के हृदय में प्रकाश होता है और वेद का ब्रह्मचर्य से ही सम्बन्ध होता है परन्तु देखो जब ब्रह्मचर्य से समन्वय होता है तो वेदाः अमृता वो अमृत बन करके ब्रह्मचारी उसका अपने में सिञ्चन करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो जब ये वाक् मानो देखो कात्यायन के गृह में हमें प्राप्त हुआ तो कात्यायन ने हमें बहुत-सी सन्तुष्टियाँ दीं और हमें आशीर्वाद दे करके कात्यायन ने प्रातःकालीन जब देखो उनके गृह में पूज्यपाद गुरुदेव के समीप हम याग करने लगे।

याग करते तो पूज्यपाद गुरुदेव से मानो देखो कात्यायन ने ये कहा हे ऋषिवर! देखो आचार्य किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! देखो आचार्य ने कहा, उन्होंने कहा जो अपने आचारसँहिता को नृत्य करने

वाला है वही आचार्य है। और पुनः कहा कि आचार्य किसे कहते हैं? उन्होंने कहा जो अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को मानो ज्ञान में तपा लेता है उसको आचार्य कहते हैं। मुनिवरो! देखो कात्यायन ने फिर से ये प्रश्न किया क्या आचार्य किसे कहते हैं? उन्होंने कहा आचार्य उसे कहते हैं जो तपोमयी इन्द्रियों को संयम में करता हुआ, वेद की प्रतिभा में रत्त होता हुआ प्रभु को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो जब-जब पूज्यपाद गुरुदेव से ये प्रश्न किया गया तो पूज्यपाद गुरुदेव मानो मौन हो गए और मौन हो करके सम्भवा और कात्यायन भी मौन हो गया। मुनिवरो! देखो याग करके, याग का उपसंहार करके मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारीजन और अब्रहे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! सबने वहाँ से गमन किया, अपने विद्यालय में प्रवेश हो गए।

## ऋषि मुनि प्रेरणा के स्त्रोत

मुनिवरो! देखो विचार-विनिमय क्या है कि हम अपने समाज को कैसे ऊँचा बना सकते हैं। मानो देखो वह समय बहुत दूरी चला गया है मैं अपने ब्रह्मा वाचक प्रही लोकाम् मैं अपने आचार्यों से ये कहा करता हूँ, हे मानव तू अपने को इतना विचित्र बना, इतने को तू अपने को क्रियात्मक बना इतनी सुन्दर तेरी आचारसँहिता होनी चाहिए जिससे आचारसँहिता को अपनाता हुआ मानव के मस्तिष्क में एक गम्भीरता की प्रतिभा उसके हृदय में प्रवेश कर जाए।

मेरे पुत्रों! देखो उस समय महर्षि शिकामकेतु ऋषि महाराज उद्दालक ने कहा था ऋषि से क्या हे भगवन्! मैं मानो देखो इसी आभा में लगा हुआ हूँ, इसका ही चिन्तन करता रहता हूँ। ये प्रेरणा मुझे ऋषि-मुनियों से प्रातःकाल से प्राप्त होती रही है, उसी प्रेरणा के स्त्रोत में प्रवेश हो करके मैंने एक याग का प्रारम्भ किया था। मैंने अपनी पत्नी से कहा हे देवी! हमें याग करना है। मानो देखो यहाँ संसार में जितना सुकर्म है सबका नाम याग है। माता अपने पुत्र को जन्म देती है तो वह

यदि माता है तो मानो वह याग कर रही है, पुत्रेष्टी याग करती है। मेरे प्यारे! बालक को अपने गर्भाश्य में शिक्षा देना प्रारम्भ कर देती है जब वो बाह्य जगत में, पृथ्वी के गर्भ में आता है तो उसे मानो उसके उपराम भी वह शिक्षा देती रहती है। मुनिवरो! देखो ब्रह्मवेत्ता बना देती है, ब्रह्मनिष्ठ बना देती है, विज्ञान के युग में प्रवेश कर देती है। मेरे प्यारे! देखो आचारसँहिता में उसे निर्मित कर देती है।

विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! देखो ब्रह्मब्रहे वो याग हो रहा है। राजा अपने राष्ट्र में अश्वमेघ याग करता है। अश्व नाम राजा का है मेघ नाम प्रजा का है। मुनिवरो! देखो प्रजा को अच्छी प्रकार जब सुसज्जित शिक्षा बुद्धिजीवी प्राणियों में बेटा! अपना उद्घोष करता राजा अपनी आचारसँहिता को विचित्र बनाता है। तो मुनिवरो! देखो राजा केवल इसलिए होता है कि वह प्रजा को अनुशासन में ला सके। यदि राजा प्रजा को अनुशासन में नहीं ला सकता तो मानो वह याग नहीं कर रहा है, वह याज्ञिक नहीं बना हुआ अपने उदर की पूर्ति में लगा हुआ है। तो विचार-विनिमय क्या आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं, विचार ये जितना भी समाज का सुकर्म है उस सर्वत्र का नाम एक याग माना गया है परन्तु **मुख्यत्व याग वह जो अग्नि के समीप विद्यमान हो करके यजमान अपने द्रव्य का सदुपयोग करता हुआ मानवीयता में परणित होता रहता है।** आओ, आज मैं विशेष चर्चाएँ प्रगट करने नहीं आया हूँ। आज मैं मानो तुम्हें कुछ ऋषि-मुनियों की चर्चाएँ करने क्या ऋषि-मुनियों का इस सम्बन्ध में क्या विचार है क्या इनकी मानो तत्परता रही है ये विचार तुम्हें देने के पश्चात् सब्रहा लोकाम्। बेटा! शिकामकेतु ऋषि महाराज और वैश्नकृति के द्वारा दोनों का ये विचार-विनिमय हो रहा था परन्तु वे नमस्कार करके उनकी चित्रावलियों में यन्त्रों में अपने पिता महापिताओं का दर्शन करके बेटा! उन्होंने वहाँ से गमन किया। वह अपने हृदयसुताः, वह अपने आश्रम में जा पहुँचे। पति-पत्नी मानो देखो याग

में परणित रहते, चित्रावलियों में मग्न रहते और विज्ञान की तरङ्गों में बेटा! रत्त रहना ये मानवीयता का कर्त्तव्य है क्योंकि मानव अपने मन और प्राण की प्रतिभा में जो विज्ञान परमाणुवाद में गुथा हुआ बेटा! उसके ऊपर वह अन्वेषण करता रहे, विचार-विनिमय करता रहे तो उसकी मानवीयता पवित्र बनती है।

ये है बेटा! आज का वाक्; आज के वाक् **उच्चारण करने का अभिप्रायः** ये क्या मुनिवरो! देखो मानव जब माला को अपने में धारण करता है ये माला कहलाती है, शब्दों की भी माला है। मानो देखो एक यन्त्र दूसरा यन्त्र मानो इसी प्रकार हम एक-दूसरे में जानकारी करते, ये भी एक माला कहलाती है। उस माला को हम मानो देखो सोमरूपी सूत्र में पिरो करके अपने में धारण करके शब्दों की उद्घोषता को बेटा! अपने मस्तिष्क में, जो लघु मस्तिष्क में एक ध्वनि होती है उस ध्वनि में मुनिवरो! देखो वह ध्वनि को ध्वनित करता हुआ **अपनी पाँच इन्द्री ज्ञानेन्द्रियों के साकल्य बना करके अपने हृदयरूपी यज्ञशाला में याग करना बेटा! अपने मानवीयत्व को यौगिकता में ले जाना है।** ये है आज का हमारा वाक्, अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् मा रथम् ब्रह्मभूः वायाऽम् गतऊ रथाः वाचन्नमाः।
ओ३म् ग्राह वरुणं ब्रह्म वाचन्न गाताऽम् देवाऽम।
ओ३म् सर्वम् भ्रदाः अहब्रथाः।।

**दिनाँक** : 15 अक्टूबर, 1985
**समय** : प्रातः 10 बजे
**स्थान** : ग्राम तिलपत,
फरीदाबाद

॥ ओ३म् ॥

# चैत्र मास में प्रभु के उपासक दैवी यज्ञ किया करते थे

जीते रहो!

मैं अवैदिकता की चर्चा नहीं करता। हमारे यहाँ जो वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है उसकी चर्चा करता हूँ। जब सप्तकोण की निर्माणशाला बनाई जाती है यज्ञशाला, निर्माणशाला को दोनों रूपों से परिणित किया गया है। उसमें **'अप्रतम्'** पश्चिम जो भाग है उसमें लगभग तीन जिह्वा आ जाती हैं। उनके आधार पर ही उस आसन पर यजमान विराजमान होता है। पत्नी सहित अनुष्ठान संकल्प करता है। अग्नि के समीप विराजमान हो करके संकल्पवादी बनता है। यज्ञ का अभिप्राय है, संकल्प। यज्ञ का अभिप्राय है, इस संसार को सुगन्धि देना। देवीयज्ञ का अभिप्राय है कि जो चैत्रमास होता है, जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी प्रेरणा दे रहे हैं, इसमें जो देवी यज्ञ होते हैं, उसमें सप्तकोण की यज्ञशाला का निर्माण होता है और यजमान पत्नी सहित विराजमान होकर यज्ञ करता है। सबसे प्रथम ज्योति को जागरूक करता है। ज्योति को जागरूक करके उस प्रभु से याचना करते हुए वह प्रभु की गोद में जाने का प्रयास करता है। परन्तु प्रभु की उपासना करते हुए महत्ता वाली ज्योति को जागरूक करने वाला जो यजमान है वह दैवी यज्ञ करता है। तो बेटा! अभिप्राय यह कि वह जो सप्तकोण की यज्ञशाला है उसमें जो सुगन्धि उत्पन्न होती है, उसमें जो तरंगें उत्पन्न हैं, वह इस पृथ्वी को प्राप्त हो जाती हैं। मानो पार्थिव जो तत्व है उन्हीं को वह प्राप्त हो जाती हैं। प्राप्त होने का अभिप्राय यह कि जो नाना प्रकार की वनस्पतियाँ इस पृथ्वी पर, वसुन्धरा के गर्भ में शुद्ध रूप से परिपक्व हो जाती हैं उसमें सुगन्धि प्रदान की जाती है।

**पूज्यपाद-गुरुदेव**

॥ ओ३म् ॥

# ऋषियों के उद्‌गार

1. आर्य कहते हैं श्रेष्ठ को।
2. देवयान उसको कहते हैं जहाँ देव आत्माएँ रहती हैं।
3. पिशाच उन्हें कहते हैं जिनका पुण्य अधिक होता है और पाप सूक्ष्म।
4. सूक्ष्म शरीर से अन्तरिक्ष में रमण करने वाली आत्माओं को देवता कहते हैं।
5. आज संसार में ऊँचे उठो, वह कर्म करो जिस कार्य के करने से तुम्हारी संज्ञा ऊँची बने, विलक्षण बने।
6. देवता उन्हें कहते हैं जिनकी सूक्ष्म शरीर की संज्ञा समाप्त नहीं होती।
7. मोक्ष वह है जो इन बन्धनों से पार हो चुका हो जहाँ अन्तकरण, बुद्धि और महान् इन्द्रियों के विषय नहीं रहते।
8. परमात्मा जिन ऋषियों को वेदों का ज्ञान देता है वह ऋषि भी देवता कहे जाते हैं।
9. प्रलय काल में देवयान भी नहीं रहता।
10. ज्ञान विज्ञान पूर्व सृष्टि के आधार से ऋषि-मुनियों के द्वारा सृष्टि के आरम्भ में प्रकट होता है।
11. वनस्पतियों का आहार करके, सोमरस का पान करके हमारे पूर्वज ऋषि बने।
12. सृष्टि के आरम्भ में चारों वेद चार ऋषियों से प्रकट हुए, परमपिता परमात्मा ने उन्हें विशेष ज्ञान दिया।
13. हमारे आचार्यों ने इन चारों वेदों की 1127 शाखाओं की गणना कराई।
14. अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी यह सभी देवता माने गए हैं।
15. जल भी देवता है जो महान वनस्पतियों को उत्पन्न करता है।
16. ब्रह्मा वह है जिसका वेदमय जीवन हो।

॥ ओ३म् ॥

## सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से उनकी जन्म-स्थली पर सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन समस्त ग्राम वासियों द्वारा ग्राम खुर्रमपुर सलेमाबाद, गाजियाबाद में **दिनाँक 22 मार्च 2019** से **24 मार्च 2019** तक अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है। जिसमें आप सभी याज्ञिक प्रेमी अपने परिवार, इष्ट मित्रों व सम्बन्धियों सहित सादर आमन्त्रित हैं। यज्ञ की ज्योति को बल प्रदान करने के लिए आपकी आहुति द्वारा यज्ञ का समापन होना अपेक्षनीय है।

**आयोजक व निवेदक :** आप और हम।

## मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

# नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)** **PAN No. – AAAAV7866J**

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

**website : www.shringirishi.in**

**Email : contact@shringirishi.in**

# सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. होगा, जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

## योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

| | | |
|---|---|---|
| *1. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 1) | 110.00 |
| *2. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 2) | 110.00 |
| *3. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 3) | 120.00 |
| *4. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 4) | 110.00 |
| 5. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 5) | 110.00 |
| 6. | Yogic Wisdom of Ancient Rishis | 100.00 |
| 7. | वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान | 30.00 |
| 8. | आत्म-लोक | 45.00 |
| *9. | धर्म का मर्म | 50.00 |
| 10. | शंका-निवारण | 40.00 |
| 11. | यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व | 50.00 |
| 12. | आत्मा व योग-साधना | 40.00 |
| *13. | देवपूजा | 50.00 |
| 14. | अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1) | 150.00 |
| 15. | अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2) | 150.00 |
| 16. | अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3) | 140.00 |
| 17. | रामायण के रहस्य | 45.00 |
| 18. | यज्ञ एवं औषधि विज्ञान | 50.00 |
| 19. | महाभारत के रहस्य | 35.00 |
| 20. | अलङ्कार-व्याख्या | 45.00 |
| 21. | रावण-इतिहास | 65.00 |
| 22. | महाराजा-रघु का याग | 35.00 |
| 23. | वनस्पति से दीर्घ-आयु | 40.00 |
| 24. | मोक्ष प्राप्ति का मार्ग | 40.00 |
| 25. | चित्त की वृत्तियों का निरोध | 45.00 |
| 26. | आत्मा, प्राण और योग | 40.00 |
| 27. | पञ्च-महायज्ञ | 45.00 |
| 28. | अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त | 50.00 |
| 29. | याग-मन्जूषा | 45.00 |
| 30. | आत्म-दर्शन | 35.00 |
| 31. | पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन | 40.00 |
| 32. | याग और तपस्या | 70.00 |
| 33. | यागमयी-साधना | 45.00 |
| 34. | यागमयी-सृष्टि | 40.00 |
| 35. | याग-चयन | 50.00 |
| 36. | दिव्य-रामकथा | 150.00 |
| 37. | ज्ञान-कर्म-उपासना | 50.00 |
| 38. | दिव्य-ज्ञान | 45.00 |
| 39. | महाभारत एक दिव्य दृष्टि | 140.00 |
| 40. | महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग | 45.00 |
| 41. | आत्म-उत्थान | 45.00 |
| *42. | तप का महत्त्व | 45.00 |
| 43. | अध्यात्मवाद | 45.00 |
| 44. | ब्रह्मविज्ञान | 45.00 |
| 45. | वैदिक-प्रभा | 40.00 |
| 46. | प्रकाश की ओर | 40.00 |
| 47. | कर्तव्य में राष्ट्र | 45.00 |
| 48. | वैदिक-विज्ञान | 40.00 |
| 49. | धर्म से जीवन | 40.00 |
| 50. | आत्मा का भोजन | 45.00 |
| 51. | साधना | 40.00 |
| 52. | त्रेताकालीन-विज्ञान | 45.00 |
| 53. | यज्ञोमयी-विष्णु | 45.00 |
| 54. | यौगिक प्रवचन माला भाग-6 | 110.00 |
| 55. | स्वर्ग का मार्ग | 50.00 |
| *56. | यौगिक प्रवचन माला भाग-7 | 110.00 |
| 57. | माता मदालसा | 60.00 |
| *58. | यौगिक प्रवचन माला भाग-8 | 110.00 |
| *59. | यौगिक प्रवचन माला भाग-9 | 110.00 |
| 60. | यौगिक प्रवचन माला भाग-10 | 110.00 |
| 61. | याग एक सर्वाङ्ग पूजा | 110.00 |
| 62. | यौगिक प्रवचन माला भाग-11 | 110.00 |
| *63. | यौगिक प्रवचन माला भाग-12 | 110.00 |
| 64. | मानव कल्याण की चर्चाएँ | 60.00 |
| 65. | प्रभु-दर्शन | 60.00 |
| *66. | यौगिक प्रवचन माला भाग-13 | 110.00 |
| *67. | समाज उत्थान का मार्ग | 60.00 |
| *68. | यौगिक प्रवचन माला भाग-14 | 110.00 |
| *69. | ब्रह्म की ओर | 60.00 |
| *70. | ईश्वर मिलन | 60.00 |
| *71. | यौगिक प्रवचन माला भाग-15 | 110.00 |
| *72. | यौगिक प्रवचन माला भाग-16 | 110.00 |
| *73. | नैतिक शिक्षा | 60.00 |
| *74. | यौगिक प्रवचन माला भाग-17 | 110.00 |
| *75. | आत्मिक ज्ञान | 60.00 |

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

# पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

## मासिक सहयोग

| | |
|---|---|
| श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली | 1000 रुपये |
| श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर | 1000 रुपये |
| श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा | 1000 रुपये |
| श्री ज्ञानेश द्विवेदी | 1000 रुपये |
| श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश | 500 रुपये |
| श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद | 500 रुपये |
| मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा | 251 रुपये |
| मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा | 251 रुपये |
| डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात | 250 रुपये |
| श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा | 250 रुपये |
| श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल | 201 रुपये |
| श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली | 101 रुपये |
| श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली | 101 रुपये |
| श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली | 101 रुपये |
| श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली | 101 रुपये |
| मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश | 101 रुपये |
| मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली | 101 रुपये |
| कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश | 101 रुपये |
| मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली | 101 रुपये |
| मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका | 101 रुपये |
| श्री संजय उर्फ टीटू सुपुत्र श्री सोमदत्त त्यागी, तलहटा | 100 रुपये |

## नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं का नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती इसलिए सभी दानदाताओं से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ-साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर दान राशि का अन्य विवरण सहित सूचना देने का कष्ट करें–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   के-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294

**योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज**

## उद्‌बोधन

आज पर्ययण समय में वेदों का गान गाते-गाते हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे विधाता हमारे द्वारा कोई अमूल्य वस्तु प्रदान कर रहा हो। इसका क्या अभिप्राय है कि वेदों का गान गाते समय हृदय में आनन्द कहाँ से आ जाता है। वह कौन-सी अमूल्य निधि है जो हमें परमात्मा ने प्रदान की है? आज हम उस विधाता के बहुत बड़े ऋणी हैं जिस प्रकार मुनिवरो! प्रजा राजा की ऋणी होती है, क्यों होती है? कौन-सी प्रजा ऋणी होती है? मुनिवरो! जो प्रजा राजा के बनाए हुए नियमों के आधार से नहीं चलती, उसके आदर्शों का पालन नहीं करती। इसीलिए आज हम परमात्मा के ऋणी बने बैठे हैं। जो मानव परमात्मा के नियम का अच्छी प्रकार पालन नहीं करता, नाना प्रकार की अशुद्धि करता है, परमात्मा की नाना प्रकार की आलोचनाएँ करता है, वह मानव परमात्मा का महाऋणी है।

**पूज्यपाद-गुरुदेव**

(पुष्प-3 – प्रवचन–दिनांक 9 दिसम्बर 1962)

वर्ष 47 : अंक : 557
फरवरी 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-02-2019
**Published on 5th day of the same month**